om-21 shivratri-2014-final -print_Layout 4 1/20/2014 7:28 PM Page 2

सर्वत्र है उस नटराज शिव की महिमा

भगवान नटराज हैं, अर्थात् नट की तरह अपनी ऊँगली के ईशारे पर सभी को नचाने वाला। उस नटराज को सभी ने माना तो सही पर जाना नहीं। माना भी तो ऐसे, जैसा जिसने कहा ! आइये हम आपको परमात्मा के उन सभी दिव्य नामों से अवगत कराते हैं जिसे सुनकर आपके रोमांच खड़े हो जायें, कि क्या बात है? जिसे हम सुना-अनसुना कर देते थे, उन नामों के अर्थों में इतनी गुह्यता है !

ईसा मसीह ने परमात्मा को "दिव्य ज्योति" कहा

ईसा मसीह (जीज़स क्राइस्ट) ने गॉड को लाइट कहा है। उन्होंने कहा है, गॉड इज़ लाईट, आई एम द सन् ऑफ गॉड। जीज़स ने कभी यह नहीं कहा कि आई एम गॉड। उसने भी उस लाईट को परमात्मा का स्वरूप बताया। ओल्ड टेस्टामेंट में दिखाया गया है कि जब हज़रत मूसा शिनाई पर्वत पर गए तो वहां पर उन्हें परम ज्योति का साक्षात्कार हुआ जिसको देखते ही हज़रत मूसा ने कहा जेहोवा। उस तेज को नाम दिया जेहोवा और उस प्रकाश ने उसको दो पत्थरों पर दस आदेश दिए जो आज भी उनके ओल्ट टेस्टामेंट में लिखे हुए हैं। चर्च में जाएंगे तो वहां पर हमें मोमबत्तियां मिलती हैं। उसमें भी एक बड़ी मोमबत्ती होती है। बाकी सब छोटी मोमबत्तियां होती हैं। बड़ी मोमबत्ती परमात्मा का प्रतीक है। छोटी मोमबत्तियां आत्माओं का प्रतीक है।

"बालेश्वर" शिव को यहूदियों ने भी पूजा

थाइलैंड में भी एकोनिस और ऐस्टर्रिग्स नाम से शिवलिंग पूजे जाते रहे हैं। यहूदियों के यहां शिवलिंग को बेलफेगो कहते हैं। ये लोग शिवलिंग की स्थापना करके बाल नाम से पूजते हैं।

भारत में भी शिवलिंग के अनेक मन्दिर बालेश्वर नाम से हैं। ये लोग बाल अथवा बालेश्वर की मूर्ति के सामने धूप-दीप आदि जगाते थे। यहां शपथ को नेम कहते हैं। ये शिवलिंग को सत्य स्वरूप परमात्मा की प्रतिमा मानने के कारण उसके सामने नेम अथवा शपथ लेते थे।

मिस्र ने भी स्वीकारा परमात्मा का अस्तित्व

मिस्र में शिवलिंग की पूजा आईसिस और ओसिरिस नाम से होती थी। ओसिरिस शब्द "ईश" शब्द से बना है। शिवलिंग की प्रतिमा के साथ वे बैल की मूर्ति रखा करते थे।

ईश्वर, भगवान या परमात्मा, शिव के पर्यायवाची नाम हैं। उनके गुणवाचक नामों में हमेशा ईश्वर या नाथ जैसे शब्दों का प्रयोग होता है। परमात्मा शिव सब मनुष्य आत्माओं के मात-पिता हैं, उनका कोई माता-पिता नहीं है। वे देवों के भी देव महादेव, नटराज हैं। विश्व के विभिन्न धर्मसंस्थापकों एवं मनुष्य आत्माओं ने शिव की परम-सत्ता को अलग-अलग नामों से स्मरण किया है जो उनकी सार्वभौमिकता को सिद्ध करता है। जो सर्वज्ञ, सर्वेश्वर, सर्वमान्य, सर्वशक्तिमान और सर्वोपरी है उसी को परमात्मा कहा जाता है। भारत में कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी सर्वत्र ज्योतिर्लिंगम के ही मंदिर पाए जाते हैं। भारत से बाहर नेपाल में पशुपतिनाथ, जापान, थाइलैंड, यूनान, मिस्र, बेबीलोन के अलावा अन्य देशों में भी परमात्मा की परिभाषा परम ज्योति, सूर्य के समान तेजोमय प्रकाश के रूप में ही की गई है।

सभी महान् विभूतियों की स्मृति को बनाये रखने के लिए उनके स्मारक चिन्ह, मूर्तियां अथवा मंदिर आदि बनाये जाते हैं। परन्तु संसार में सब मूर्तियों में सर्वाधिक पूजा सम्भवतः शिवलिंग की ही होती है। विश्व में शायद ही कोई देश होगा जहाँ शिवलिंग की पूजा किसी भी रूप में न होती हो। शिव का शाब्दिक अर्थ है 'कल्याणकारी' और लिंग का अर्थ है-लक्षण। अतः शिवलिंग का अर्थ हुआ-ऐसा पिता जिसके लक्षण कल्याणकारी हों । प्राचीन काल में शिवलिंग हीरों (जो कि प्राकृतिक रूप से ही प्रकाशवान् होते हैं) के बनाये जाते थे क्योंकिपरमात्मा का रूप ज्योतिर्बिंदु है। सोमनाथ के प्रसिद्ध मंदिर में सर्वप्रथम संसार के सर्वोत्तम हीरे कोहिनूर से बने शिवलिंग की स्थापना हुई थी। यद्यपि आज ईसाई, मुसलमान, बौद्ध तथा दूसरे मतों के लोग शिवलिंग की उतनी और उस रीति से पूजा नहीं करते हैं जैसे कि हिन्दू करते हैं फिर भी ऐसे बहुत से प्रमाण मिलते हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि वर्तमान समय में भी विभिन्न धर्मों वाले लोग शिवलिंग को धार्मिक महत्व देते हैं।

शिव, श्रीराम के भी आराध्य

परमात्मा शिव की पूजा रामेश्वरम् के रूप में स्वयं श्रीराम ने भी की है। शिव श्रीराम के भी भगवान हैं। सोचने की बात है कि अगर श्रीराम भगवान होते तो उनको उस निराकार ज्योतिर्लिंगम् की पूजा करने की क्या आवश्यकता हुई? वह जानते थे कि रावण को अपनी जिस शक्ति का अभिमान है वह उसने परमात्मा शिव की तपस्या, आराधना करके प्राप्त की थी। शिव की शक्ति के सामने मुकाबला करने के लिए उस परम शक्ति परमात्मा की शक्ति के बिना वह युद्ध में विजयी नहीं हो सकते। अतः सिद्ध है कि उन्होंने भी शिव की आराधना की थी।

मुस्लिमों के भी हैं नूर-ए-इलाही

भारत में परमपिता परमात्मा शिव के ज्योतिस्वरूप शिवलिंग की व्यापक स्तर पर मान्यता तो देते ही हैं परन्तु भारत से बाहर भी दूसरे धर्मों के लोग भी इसको मान्यता देते हैं। मुसलमानों के पवित्र स्थल मक्का में भी इसी आकार का पत्थर है जिसे वे बड़े प्यार व सम्मान से चूमते हैं। उसे वे संग-ए-असवद कहते हैं। परन्तु वे भी इस रहस्य को नहीं जानते हैं कि उनके धर्म में मूर्ति पूजा की मान्यता न होते हुए भी शिवलिंग के आकार वाले पत्थर की स्थापना क्यों की गई है? उसको वे लोग नूर-ए-इलाही भी कहते हैं। नूर-ए-इलाही अर्थात् वो नूर, वो तेज, वो तेजोमय स्वरूप जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम् कहा, ज्योति स्वरूप कहा। ज्योति माना ही तेज। इसलिए मुसलमान जब नमाज़ पढ़ते हैं तो मक्का की दिशा में नमाज़ पढ़ते हैं। जिसको भारत वर्ष में मक्केश्वर कहा जाता है अर्थात् मुसलमानों के अल्लाह, नूर-ए-इलाही कहकर के निराकार को ही याद किया।

यूनान में भी होती है शिव की पूजा

यूनान में जाएंगे तो शिवलिंग का नाम 'फल्लुस' प्रचलित है। यहां शिवलिंग की पूजा उनके धर्म का प्रधान अंग थी। शिवलिंग के पास ही वे बैल की मूर्ति स्थापित किया करते थे। बैल को सभी देशों में धर्म का सूचक माना जाता है। चूंकि शिव सत्धर्म की स्थापना करते हैं, इसलिए उनका वाहन बैल दिखाया जाता है। यूनान में शिवलिंग को फल्लुस के नाम से याद करते थे क्योंकि वह तुरन्त फल देने वाले परमात्मा की प्रतिमा है।

पारसियों में भी ज्योति स्वरूप परमात्मा की मान्यता

पारसियों के अग्यारी में जाएंगे तो वहां पर होली फायर मिलता है। कहा जाता है पारसी लोग जब ईरान से भारत में आए तो जलती हुई ज्योत का टुकड़ा लेकर आए और उसको कहा कि यह अखण्ड ज्योत है। आज भी नई अग्यारी स्थापन होती है तो वो जलती हुई ज्योत का एक टुकड़ा लेकर वहां स्थापित करते हैं जो सदा जलती आई थी, जो सदा अखण्ड है, परमात्मा का दिव्य स्वरूप है। तो इस धर्म में ज्योति स्वरूप पिता परमात्मा की ही मान्यता है।

शंकर भी लगाते हैं शिव का ध्यान

तीन आकारी देवताओं ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर का अपना-अपना अस्तित्व है और परमात्मा शिव जो इन तीनों के रचयिता हैं, उनकी सत्ता इनसे भिन्न है। प्रायः लोग शिव एवं शंकर को एक ही सत्ता के दो नाम समझते हैं परन्तु शिव और शंकर वास्तव में एक नहीं हैं। शंकर एक सूक्ष्माकारी रूप वाले देवता हैं परन्तु शिव निराकारी हैं। शिव कल्याणकारी परम पिता परमात्मा का नाम है और शंकर आकारी देवता हैं जो कि तमोगुणी, आसुरी सृष्टि का विनाश करवाने के निमित्त हैं। कई चित्रों में शंकर और पार्वती को शिवलिंग के सम्मुख बैठा दिखाया गया है जिसमें शंकर, शिवलिंग की ओर संकेत करते हुए पार्वती को भी प्रेरित करते हैं कि वह अपनी योग साधना में शिव का मनन करें। इससे भी शिव एवं शंकर का भेद स्पष्ट प्रतीत हो जाता है। हम देखते हैं कि शंकर हमेशा ध्यान की अवस्था में बैठे होते हैं। इससे स्पष्ट है कि उनके भी कोई आराध्य या देव हैं जिनका वह स्मरण करते रहते हैं। परमपिता परमात्मा शिव, शंकर के भी रचयिता हैं। वह शंकर द्वारा इस आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं। शंकर जी की ध्यान मुद्रा में योग की वह अवस्था बताई है। अर्धनेत्र खुले और अर्ध पद्मासन या सुखासन का आसन, जिसमें शंकर बैठकर निराकार परमात्मा का ध्यान लगाते हैं। शिव ही सबके आराध्य परमपिता हैं ।

जापान में चिंकोनसेंकी का स्मरण

जापान में शिकोनिज़म सेक्ट वाले तीन फीट की ऊंचाई पर और तीन फीट दूर बैठकर एक थाली में रखे लाल पत्थर पर ध्यान लगाते हैं और इस पवित्र पत्थर को 'करनी का पवित्र पत्थर' कहते हैं। उसका नाम दिया है चिंकोनसेकी।

चिंकोनसेकी का अर्थ है, जो शान्ति का दाता है, जिसका ध्यान लगाने से शान्ति प्राप्त होती है। वे उसे परमात्मा का स्वरूप मानते हैं। चीन में शिवलिंग को हुवेड-हिफुह कहा जाता था और इसी नाम से इसकी पूजा होती थी। फ्रांस में गिरजाघरों में तथा अजायबघरों में लिंग रूप के पत्थर आज भी स्मारक रूप में देखे जाते हैं। बेबीलोन में शिवलिंग को शिउम् कहा जाता था। मिस्र में भी सेवा नाम से पूजा होती थी। फिजी देश के निवासी शिव को 'सेवा' या 'सेवाजिया' के नाम से पूजते हैं। स्पष्ट है कि ये सभी नाम और सेवाजिया नाम शिव से या शिवजी से बने हैं।

इक ओंकार, सत्नाम

सिखों के धर्म-स्थापक गुरु नानक ने भी परमात्मा को ओंकार कहा है जबकि ज्योतिस्वरूप शिव परमात्मा के एक प्रसिद्ध मन्दिर का नाम भी ओंकारेश्वर है। उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में परमात्मा के सत्य स्वरूप का वर्णन किया है। वो निराकार है, निर्वेर है, सतनाम है जिसको काल भी नहीं खा सकता। गुरु गोविन्द सिंह जी के 'दे शिवा वर मोहे' शब्द भी उनके परमात्मा शिव से वरदान मांगने की याद दिलाते हैं। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा शिव एक धर्म के पूज्य नहीं बल्कि विश्व की सभी आत्माओं के परमपूज्य परमपिता हैं।

गिरिजाघर का रहस्य

रोम में शिवलिंग को प्रियपस कहते थे। वहीं इटली में गिरजा में शिवलिंग की प्रतिमा रखी जाती रही है। गिरजा शब्द गिरिजा से बना है। गिरिजा का अर्थ पार्वती है। सभी आत्माओं रूपी पार्वतियों के प्रति परमात्मा शिव की प्रतिमा इनमें स्थापित हुई रहती थी। इसलिए चर्च का नाम गिरजाघर है।

कहीं समय न बीत जाये

वर्तमान समय की हालत को देखें तो यह शिव परमात्मा के आने का अनुकूल समय है और वह आकर अपना कार्य भी कर रहे हैं। कहीं यह सुअवसर हमारे हाथ से निकल न जाए। हमें इस परिवर्तन की वेला में स्वयं का परिवर्तन कर अपना भाग्य जगाना है। मनुष्य की वास्तविक उन्नति उसे कल्याण की क्रियात्मक प्राप्ति एवं आनंद की आध्यात्मिक अनुभूति तो शिव से मन को जोड़ने से ही प्राप्त होती है। अतः हे मनुष्य, थोथी विद्वता की बातों को छोड़कर अपनी उन्नति और अपने आध्यात्मिक लाभ की बात सोचते हुए तू ज्योतिर्बिन्दु शिव से योग लगा।

हाँ, शिव ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट हुए ...

मनुस्मृति में लिखा है कि सृष्टि के आरम्भ में एक अण्ड प्रकट हुआ जो हज़ारों सूर्य के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था। इसी प्रकार शिव पुराण में धर्म संहिता में लिखा है कि कलियुग के अन्त में प्रलय काल में एक अद्भुत ज्योतिर्लिंग प्रकट हुआ जो कि कालाग्नि के समान ज्वालामान था। वह न घटता था और न बढ़ता था, वह अनुपम था और उस द्वारा ही सृष्टि का आरम्भ हुआ।

वेदों-पुराणों में भी शिव अवतरण की बात कही गई है। शिव पुराण में लिखा है कि भगवान शिव ने कहा- मैं ब्रह्मा जी के ललाट से प्रकट होऊंगा। इस कथन के अनुसार समस्त संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट हुए और उनका नाम रूद्र हुआ। (ये वाक्या शिवपुराण में कोटि रुद्र संहिता के 42वें अध्याय में लिखा है) शिव ने ब्रह्मा मुख द्वारा सृष्टि रची। शिवपुराण में अनेक बार यह उल्लेख आया है कि भगवान शिव ने पहले प्रजापिता ब्रह्मा को रचा और फिर उनके द्वारा सतयुगी सृष्टि की स्थापना की ।

शिवरात्रि समस्त आत्माओं का त्योहार

इस पौराणिक उल्लेख का भी यही भाव है कि परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के ललाट में अवतरित हुए और उनके मुख द्वारा ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर इस दुःख से भरे एवं तमोगुणी हो चुके संसार का कल्याण किया। यदि सभी शिवरात्रि के आंचल में छिपे आध्यात्मिक रहस्यों को पूर्ण रूप से समझ जायें तो विश्व परिवर्तन सहज ही हो सकता है। शिवरात्रि सिर्फ शैव सम्प्रदाय के भक्तों का पर्व नहीं है, लेकिन सारे विश्व के प्रमुख धर्म, प्राचीन सभ्यता और प्राचीन संस्कृति को देखें तो स्पष्ट होता है कि यह पावन पर्व विश्व की सर्व आत्माओं के लिए ही है।

एक अद्भुत ज्योतिर्लिंग

मनुस्मृति में भी यही लिखा है कि सृष्टि के आरम्भ में एक अण्ड प्रकट हुआ जो हज़ारों सूर्य के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था। इसी प्रकार शिव पुराण में

धर्म संहिता में लिखा है कि कलियुग के अन्त में प्रलय काल में एक अद्भुत ज्योतिर्लिंग प्रकट हुआ जो कि कालाग्नि के समान ज्वालामान था। वह न घटता था और न बढ़ता था, वह अनुपम था और उस द्वारा ही सृष्टि का आरम्भ हुआ ।

इस तरह हम देखते हैं कि भारत के सभी वेद-ग्रंथों में परमात्मा के अवतरण की बात कही गई है। कहीं उसकी व्याख्या अण्डाकार ज्योति के रूप में, तो कहीं सूर्य से भी प्रकाशमान ज्योति के रूप में की गई है।

परमात्मा के कार्य में सहयोगी बनो

हे मनुष्य आत्माओं। अब समय आ चुका है विषय-विकारों से मुक्त होकर परमपिता परमात्मा से मंगल मिलन मनाने का। अभी नहीं तो कभी नहीं। ऐसा न हो परमात्मा आकर के अपना कार्य कर जाए और हम देखते ही रह जाएं। समय निकल जाने पर हमारे पास पछतावे के अलावा और कुछ हाथ नहीं रह जाता है। यदि हमें अपने भाग्य को जगाना है और नई सतयुगी दैवी सृष्टि की स्थापना के इस कार्य में सहयोगी बनना है, तो परमात्मा शिव के इस महान कार्य में सहयोगी बनना है। परमात्मा शिव के इस महान कार्य में अपना तन-मन-धन सफल कर 21 जन्मों की बादशाही के मालिक बनने का सुअवसर हमारे सामने है।

ज्योति ने प्रकट होकर किया नवयुग का निर्माण

महाभारत में भी लिखा है कि जब यह सृष्टि तमोगुण और अन्धकार से आच्छादित थी तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई और वह ज्योतिर्लिंग ही नए युग की स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया।

जेहोवा शिव का ही पर्यायवाची

देखा जाए तो सिर्फ भारत के धर्म ग्रन्थों में ही नहीं बल्कि यहूदी, ईसाई, मुसलमानों की पुरानी धर्म पुस्तक तोरेत का आरम्भ भी ऐसे ही होता है। सृष्टि संरचना की प्रक्रिया इस प्रकार से है कि सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर की आत्मा पानी पर डोलती थी और आदि काल में परमात्मा ने ही आदम एवं हव्वा को बनाया जिनके द्वारा स्वर्ग रचा। भगवान का नाम जेहोवा मानते हैं जो परमात्मा शिव का ही पर्यायवाची है।

श्रीकृष्ण ने भी किया शिव का पूजन

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में स्वयं श्रीकृष्ण ने भी थानेश्वर-सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता सर्वशक्तिमान्, गुणों के भण्डार, निराकार शिव की पूजा-अर्चना की और उस शक्तियों के दाता से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण ने पाण्डवों से भी शिव की पूजा करवाई। इसके बाद वह युद्ध के मैदान में उतरे और कौरवों के ऊपर विजय प्राप्त की। शिव को भोलेनाथ भी कहा गया है क्योंकि वह सहज ही प्रसन्न होने वाले हैं ।

देवी-देवता अनेक, परमात्मा हैं एक

शिव किसी एक धर्म या सम्प्रदाय के पूज्य देव नहीं हैं। बल्कि ये सभी अमर आत्माओं के परमपिता - 'अमरनाथ' हैं। आज भारत में देखा जाए तो देवताओं की पूजा क्षेत्रिय स्तर पर हो गई है, अर्थात् नॉर्थ की तरफ जाएंगे तो श्रीराम, श्री कृष्ण की पूजा मिलेगी। दक्षिण की ओर श्री वेंकटेश्वर या श्री बालाजी अर्थात् विष्णु की पूजा होती है। ईस्ट में काली पूजा, दुर्गा पूजा मिलेगी। वेस्ट में गुजरात एवं महाराष्ट्र की ओर श्री गणेश की पूजा मिलेगी। अर्थात् देवताओं की पूजा क्षेत्रिय स्तर की हो गई, लेकिन शिव की पूजा सारे भारत में होती है।

शिव ही नाथ-शिव ही ईश्वर

आज कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर जानना हमारे लिए बेहद ज़रूरी है। जैसे परमपिता परमात्मा को ज्योतिर्लिंगम क्यों कहा गया? क्योंकि परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप निराकार है जिनका अपना कोई शरीर नहीं है तथा जो सदा ज्योति के समान प्रकाशमान है। परमात्मा को ज्योति स्वरूप का एक लिंग रूप बनाकर मनुष्य के सामने रखा गया ताकि मनुष्य अपनी भावनाएं अर्पित कर सकें, पूजा कर सकें। भारत में भी मन्दिरों के नाम के पीछे भी नाथ या ईश्वर शब्द जुड़ा है क्योंकि वो सर्व का नाथ, सर्व का ईश्वर है। जैसे नाथ के रूप में मान्यता है, भोलेनाथ, बबूलनाथ, विश्वनाथ, सोमनाथ, अमरनाथ आदि। ईश्वर के रूप में गोपेश्वर, विश्वेश्वर, पापकटेश्वर, रामेश्वर, महाकालेश्वर, ओंकारेश्वर आदि।